सुरः अद-दूखान

४४ सूरतुद्दुख़ानि ६४

(मक्की) इस सूर: में अरबी के १४६५ अक्षर, ३४६ शब्द, ५६ आयतें और ३ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

ह़ामीम् (१) वल्किताबिल्मुबीन (२) इन्ना अन्ज़ल्नाहु फ़ी लैलतिम्-
मुबा-र-कतिन् इन्ना कुन्ना मुन्ज़िरीन (३) फ़ीहा युफ़्रक़ु कुल्लु अम्रिन् ह़कीम
(४) अम्-रम्-मिन् अिन्दिना इन्ना कुन्ना मुर्सिलीन (५) रह़्-म-तम्-मिर्रब्बि-क
इन्नहू हुवस्समीअुल्-अलीम (६) रब्बिस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा इन्
कुन्तुम् मूक़िनीन (७) ला इला-ह इल्ला हु-व
युह़्यी व युमीतु रब्बुकुम् व रब्बु आबाइकुमुल्-
अव्वली-न (८) बल् हुम् फ़ी शक्किय्यल्-
अबून (९) फ़र्तक़िब् यौ-म तअ्तिस्समाउ
बि दुख़ानिम्-मुबीनिंय-(१०) यग़्-शन्ना-स
हाज़ा अ़ज़ाबुन् अलीम (११) रब्ब-नक्शिफ़्
अन्नल्-अ़ज़ा-ब इन्ना मुअ्मिनून (१२) अन्ना
लहुमुज़्ज़िक-रा व क़द् जा-अहुम् रसूलुम्-मुबीन
(१३) सुम्-म त-वल्लौ अन्हु व क़ालू
मु-अ़ल्लमुम्-मज्नून (१४) इन्ना काशिफ़ुल्-
अ़ज़ाबि क़लीलन् इन्नकुम् आ-इदून (१५)
यौ-म नब्तिशुल् - बत्-श-तल् - कुब्रा इन्ना
मुन्तक़िमून (१६) व ल-क़द् फ़-तन्ना क़ब्-लहुम् क़ौ-म फ़िर्औ-न व जा-अहुम्
रसूलुन् करीम (१७) अन् अद्दू इलय्-य अिबादल्लाहि इन्नी लकुम् रसूलुन्
अमीनुंव्-(१८) -व अल्ला तअ्-लू अलल्लाहि इन्नी आतीकुम् बिसुल्तानिम्-मुबीन
(१९) व इन्नी अ़ुज़्तु बिरब्बी व रब्बिकुम् अन् तर्जुमून (२०) व इल्लम्
तुअ्मिनू ली फ़अ्-तज़िलून (२१) फ़-दआ रब्बहू अन-न हाउला-इ क़ौमुम्-मुज्रिमून
● (२२) फ़-अस्रि बिअिबादी लैलन् इन्नकुम् मुत्त - बअून (२३)
वत-रुकिल्-बह़्-र रह़्-वन् इन्नहुम् जुन्दुम्-मुग़-रक़ून (२४) कम् त-रकू मिन् जन्ना-
तिंव्-व अ़ुयूनिंव- (२५) व ज़ुरूअिंव-व मक़ामिन् करीमिंव- (२६)

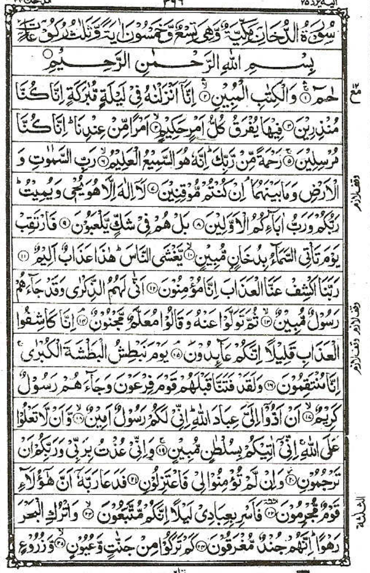
سورة الدخان مكية وهي تسع وخمسون اية وثلث ركوعات
بسم الله الرحمن الرحيم
حم ۝ والكتب المبين ۝ انا انزلنه في ليلة مبركة انا كنا
منذرين ۝ فيها يفرق كل امر حكيم ۝ امرا من عندنا انا كنا
مرسلين ۝ رحمة من ربك انه هو السميع العليم ۝ رب السموت و
الارض وما بينهما ان كنتم موقنين ۝ لا اله الا هو يحي ويميت
ربكم ورب اباىكم الاولين ۝ بل هم في شك يلعبون ۝ فارتقب
يوم تاتي السماء بدخان مبين ۝ يغشى الناس هذا عذاب اليم ۝
ربنا اكشف عنا العذاب انا مؤمنون ۝ انى لهم الذكرى وقد جاءهم
رسول مبين ۝ ثم تولوا عنه وقالوا معلم مجنون ۝ انا كاشفوا
العذاب قليلا انكم عائدون ۝ يوم نبطش البطشة الكبرى
انا منتقمون ۝ ولقد فتنا قبلهم قوم فرعون وجاءهم رسول
كريم ۝ ان ادوا الي عباد الله اني لكم رسول امين ۝ وان لا تعلوا
على الله اني اتيكم بسلطن مبين ۝ واني عذت بربي وربكم ان
ترجمون ۝ وان لم تؤمنوا لي فاعتزلون ۝ فدعا ربه ان هؤلاء
قوم مجرمون ۝ فاسر بعبادي ليلا انكم متبعون ۝ واترك البحر
رهوا انهم جند مغرقون ۝ كم تركوا من جنت وعيون ۝ وزروع

४४ सूर: दुख़ान ६४

सूर: दुख़ान मक्की है, इस में ५९ आयतें और तीन रुकूअ हैं।
शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम्, (१) इस रोशन किताब की क़सम ! (२) कि हम ने उस को मुबारक रात में
नाज़िल फ़रमाया, हम तो रास्ता दिखाने वाले हैं, (३) उसी रात में तमाम हिक्मत के काम फ़ैसले
किए जाते हैं, (४) (यानी) हमारे यहां से हुक्म हो कर, बेशक हम ही (पैग़म्बर को)
भेजते हैं। (५) (यह) तुम्हारे परवरदिगार की रहमत है। वह तो सुनने वाला, जानने
वाला है। (६) आसमानों और ज़मीन और जो कुछ इन दोनों में है, सब का मालिक
बशर्ते कि तुम लोग यक़ीन करने वाले हो। (७) उस के सिवा कोई माबूद नहीं,
(वही) जिलाता है और (वही) मारता है, (वही) तुम्हारा और तुम्हारे पहले बाप-दादा
का परवरदिगार है। (८) लेकिन ये लोग शक में खेल रहे हैं। (९) तो उस दिन का इन्तिज़ार
करो कि आसमान से साफ़ धुआँ निकलेगा, (१०) जो लोगों पर छा जाएगा। यह दर्द देने वाला
अज़ाब है। (११) ऐ परवरदिगार ! हम से इस अज़ाब को दूर कर, हम ईमान लाते हैं। (१२)
(उस वक़्त) उन को नसीहत कहां मुफ़ीद होगी, जबकि उन के पास पैग़म्बर आ चुके, जो खोल-खोल
कर बयान कर देते थे। (१३) फिर उन्हों ने उन से मुंह फेर लिया और कहने लगे, (यह तो)
पढ़ाया हुआ (और) दीवाना है (१४) हम तो थोड़े दिनों अज़ाब टाल देते हैं, (मगर) तुम फिर
कुफ़्र करने लगते हो (१५) जिस दिन हम बड़ी सख़्त पकड़ पकड़ेंगे, तो बेशक बदला ले कर
छोड़ेंगे। (१६) और उन से पहले हम ने फ़िऔंन की क़ौम की आज़माइश की और उन के पास एक
बुलंद मर्तबा पैग़म्बर आए, (१७) (जिन्हों ने) यह (कहा) कि ख़ुदा के बन्दों (यानी बनी इस्राईल)
को मेरे हवाले कर दो, मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं, (१८) और ख़ुदा के सामने सर-कशी न
करो, मैं तुम्हारे पास खुली दलील ले कर आया हूं। (१९) और इस (बात) से कि तुम मुझे पत्थर
मार-मार कर हलाक कर दो, अपने और तुम्हारे परवरदिगार की पनाह मांगता हूं। (२०) और
अगर मुझ पर ईमान नहीं लाते, तो मुझ से अलग हो जाओ। (२१) तब (मूसा ने) अपने परवर-
दिगार से दुआ की कि ये ना-फ़रमान लोग हैं। ● (२२) (ख़ुदा ने फ़रमाया कि) मेरे बन्दों को रातों-रात
ले कर चले जाओ और (फ़िऔंनी) ज़रूर तुम्हारा पीछा करेंगे, (२३) और दरिया से (कि) सूखा
(हो रहा होगा) पार हो जाओ। (तुम्हारे बाद) उन का तमाम लश्कर डुबो दिया जाएगा। (२४)
वे लोग बहुत-से बाग़ और चश्मे छोड़ गये, (२५) और खेतियां और नफ़ीस मकान, (२६) और

∴ मु. अि. मु त क़. १२ व. लाज़िम व लाज़िम व. लाज़िम ● सू. ३/४

www.IslamInHindi.org

सुरः अद-दूखान

व नअ्-मतिन् कानू फ़ीहा फ़ाकिहीन (२७) कज़ालि-क व औरस्-नाहा क़ौमन्
आख़रीन (२८) फ़ मा ब-कत् अलैहिमुस्समाउ वल्अर्ज़ु व मा कानू मुन्ज़रीन
★ (२९) व ल-क़द् नज्जैना बनी इस्राई-ल मिनल्-अज़ाबिल्-मुहीन (३०) मिन्
फ़िर्औ-न इन्नहू का-न आलियम्-मिनल्-मुस्रिफ़ीन (३१) व ल-क़दिख़्तर्-नाहुम्
अला अिल्मिन् अ-लल्-आलमीन (३२) व
आतैनाहुम् मिनल्-आयाति मा फ़ीहि बलाउम्-
मुबीन (३३) इन्-न हाउला-इ ल-यक़ूलून
(३४) इन् हि-य इल्ला मौततुनल्-ऊला व
मा नह्नु बिमुन्शरीन (३५) फ़अ्तू बिआबा-
इना इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (३६) अहुम्
ख़ैरुन् अम् क़ौमु तुब्बअिव्-वल्लज़ी-न मिन्
क़ब्लिहिम् अह-लक-नाहुम् इन्नहुम् कानू मुजिर-
मीन (३७) व मा ख़-लक़्नस्समावाति वल्-
अर्-ज़ व मा बैनहुमा लाअिबीन (३८) मा
ख़-लक़्नाहुमा इल्ला बिल्हक़्क़ि व लाकिन्-न
अक्स-रहुम् ला यअ्-लमून (३९) इन्-न
यौमल्फ़स्लि मीक़ातुहुम् अज्-मअीन (४०) यौ-म ला युग़्नी मौलन् अम्मौलन् शैअंव्-
व ला हुम् युन्सरून (४१) इल्ला मर्रहिमल्लाहु इन्नहू हुवल्-अज़ीज़ुर्रहीम (४२) ★
इन्-न श-ज-र-तज़्ज़क़्क़ूम (४३) तआमुल्-असीम (४४) कल्मुह्लि यग़्ली फ़िल्-
बुतून (४५) क-ग़ल्यिल् हमीम (४६) ख़ुज़ूहु फ़अ्-तिलूहु इला सवाइल्-जहीम
(४७) सुम्-म सुब्बू फ़ौ-क़ रअ्सिही मिन् अज़ाबिल्-हमीम (४८) ज़ुक़् इन्न-क
अन्तल्-अज़ीज़ुल्-करीम (४९) इन्-न हाज़ा मा कुन्तुम् बिही तम्तरून (५०)
इन्नल्मुत्तक़ी-न फ़ी मक़ामिन् अमीन (५१) फ़ी जन्नातिंव्-व अुयूनिंय- (५२)
यल्बसू-न मिन् सुन्दुसिंव्-व इस्तब्रक़िम्-मु-त-क़ाबिलीन (५३) कज़ालि-क व ज़व्वज्-
नाहुम् बिहूरिन् अीन (५४) यद्अू-न फ़ीहा बिकुल्लि फ़ाकिहतिन् आमिनीन (५५)

الدخان ٤٤ — اليه يرد ٢٥

وَّمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٢٦﴾ وَنَعْمَةٍ كَانُوا فِيهَا فَاكِهِينَ ﴿٢٧﴾ كَذَٰلِكَ وَأَوْرَثْنَاهَا قَوْمًا آخَرِينَ ﴿٢٨﴾
فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنظَرِينَ ﴿٢٩﴾ وَلَقَدْ نَجَّيْنَا
بَنِي إِسْرَائِيلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِينِ ﴿٣٠﴾ مِن فِرْعَوْنَ إِنَّهُ كَانَ عَالِيًا
مِّنَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدِ اخْتَرْنَاهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٣٢﴾ وَآتَيْنَاهُم
مِّنَ الْآيَاتِ مَا فِيهِ بَلَاءٌ مُّبِينٌ ﴿٣٣﴾ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ﴿٣٤﴾ إِنْ هِيَ إِلَّا
مَوْتَتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنشَرِينَ ﴿٣٥﴾ فَأْتُوا بِآبَائِنَا إِن كُنتُمْ
صَادِقِينَ ﴿٣٦﴾ أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ أَهْلَكْنَاهُمْ إِنَّهُمْ
كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٣٧﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَاعِبِينَ ﴿٣٨﴾ مَا
خَلَقْنَاهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾ إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ
مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٠﴾ يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلًى عَن مَّوْلًى شَيْئًا وَلَا هُمْ
يُنصَرُونَ ﴿٤١﴾ إِلَّا مَن رَّحِمَ اللَّهُ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٤٢﴾ إِنَّ شَجَرَتَ
الزَّقُّومِ ﴿٤٣﴾ طَعَامُ الْأَثِيمِ ﴿٤٤﴾ كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ﴿٤٥﴾ كَغَلْيِ
الْحَمِيمِ ﴿٤٦﴾ خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ
مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ﴿٤٨﴾ ذُقْ إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ﴿٤٩﴾ إِنَّ هَٰذَا مَا
كُنتُم بِهِ تَمْتَرُونَ ﴿٥٠﴾ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ﴿٥١﴾ فِي جَنَّاتٍ وَ
عُيُونٍ ﴿٥٢﴾ يَلْبَسُونَ مِن سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٥٣﴾ كَذَٰلِكَ وَ
زَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ ﴿٥٤﴾ يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ﴿٥٥﴾ لَا

आराम की चीज़ें, जिन में ऐसा किया करते थे, (२७) इसी तरह (हुआ) और हम ने दूसरे लोगों
को उन का मालिक बना दिया। (२८) फिर उन पर न तो आसमान और ज़मीन को रोना आया
और न उन को मोहलत ही दी गयी। (२९) ★

और हम ने बनी इस्राईल को ज़िल्लत के अज़ाब से निजात दी। (३०) (यानी) फ़िऔन से,
बेशक वह सर-कश (और) हद से निकला हुआ था। (३१) और हम ने बनी इस्राईल को दुनिया
वालों से समझ-बूझ कर चुना था। (३२) और उन को ऐसी निशानियां दी थीं, जिन में खुली
आज़माइश थी। (३३) ये लोग यह कहते हैं, (३४) कि हमें सिर्फ़ पहली बार (यानी एक बार) मरना
है और (फिर) उठना नहीं, (३५) पस अगर तुम सच्चे हो, तो हमारे बाप-दादा को (ज़िंदा कर)
लाओ। (३६) भला ये अच्छे हैं या तुब्बअ् की क़ौम ![1] और वे लोग जो तुम से पहले हो चुके हैं,
हम ने उन (सब) को हलाक कर दिया। बेशक वे गुनाहगार थे। (३७) और हम ने आसमानों
और ज़मीन को और जो कुछ उन में है, उन को खेलते हुए नहीं बनाया। (३८) उन को हम ने
तद्बीर से पैदा किया है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (३९) कुछ शक नहीं कि फ़ैसले का दिन
उन सब (के उठने का) वक़्त है, (४०) जिस दिन कोई दोस्त, किसी दोस्त के कुछ काम न आएगा
और न उन को मदद मिलेगी, (४१) मगर जिस पर ख़ुदा मेहरबानी करे, वह तो ग़ालिब (और)
मेहरबान है। (४२) ★

बेशक थूहर का पेड़, (४३) गुनाहगार का खाना है, (४४) जैसे पिघला हुआ तांबा, पेटों में
(इस तरह) खौलेगा, (४५) जिस तरह गर्म पानी खौलता है। (४६) (हुक्म दिया जाएगा कि)
इस को पकड़ लो और खींचते हुए दोज़ख़ के बीचों-बीच ले जाओ। (४७) फिर उस के सर पर
खौलता हुआ पानी उंडेल दो (कि अज़ाब पर) अज़ाब (हो,) (४८) (अब) मज़ा चख, तू बड़ी
इज़्ज़त वाला (और) सरदार है। (४९) यह वही (दोज़ख़) है, जिस में तुम लोग शक किया करते
थे। (५०) बेशक परहेज़गार लोग अम्न की जगह में होंगे। (५१) (यानी) बाग़ों और चश्मों
में, (५२) हरीर का बारीक और दबीज़ (भारी) लिबास पहन कर एक-दूसरे के सामने बैठे
होंगे। (५३) (वहां) इस तरह (का हाल होगा) और हम बड़ी-बड़ी आंखों वाली सफ़ेद रंग की
औरतों से उन के जोड़े लगाएंगे। (५४) वहां अम्न-सुकून से हर क़िस्म के मेवे मंगाएंगे (और

१. तुब्बअ् यमन का बादशाह था, कहते हैं कि वह तो ईमान वाला था और उस की क़ौम बुतपरस्त थी, जो हलाक कर दी गयी।

www.IslamInHindi.org

ला यज़ूक़ू-न फ़ीहल्मौ-त इल्लल्मौत - तुल् - ऊला व वक़ाहुम् अज़ाबल्-
जही़्म (५६) फ़ज़् - लम् - मिर्रब्बि - क ज़ालि - क हुवल् -
फ़ौज़ुल्-अज़ीम (५७) फ़-इन्नमा यस्सर-नाहु बिलिसानि-क ल-अ़ल्लहुम्
य - त - ज़क्करून (५८) फ़र्तक़िब् इन्नहुम् मुर्तक़िबून ★ (५९)

खाएंगे।) (५५) (और) पहली बार के मरने के सिवा (कि मर चुके थे) मौत का मज़ा नहीं चखेंगे और ख़ुदा उन को दोज़ख के अज़ाब से बचा लेगा। (५६) यह तुम्हारे परवरदिगार का फ़ज़्ल है। यही तो बड़ी कामियाबी है। (५७) हम ने इस (क़ुरआन) को तुम्हारी ज़ुबान में आसान कर दिया है, ताकि ये लोग नसीहत पकड़ें। (५८) पस तुम भी इन्तिज़ार करो, ये भी इन्तिज़ार कर रहे हैं। (५९)★